अशोक वाजपेयी

प्रेम के लिए जगह

उसने बचपन की कुछ पतंगों को बिछाकर
बनाया रंगाबिरंग बिछौना,
उसने एक कोने पर सजाए
पुराने पत्र और छबियाँ,
उसने गुनगुनाईं
कुछ प्रार्थनाएँ,
उसने जमा किए एक तरफ़
जन्म-जन्मांतरों के उपहार ....

उसने याद किए कई चेहरे
शहरों की कई ओझल खिड़कियाँ
कड़ी धूप में भी झुरमुट में
बचा अँधेरा
पुराभाषाओं के लुप्त शब्द ....

उसने अनादि से अनन्त तक
प्रेम के लिए जगह बनाई ।

अशोक वाजपेयी, तिनका तिनका
दिल्ली, प्रवीन प्रकाशन 1996:I.372